1938B **Secret of children's spontaneity** (Jain Sandesh, 1938)

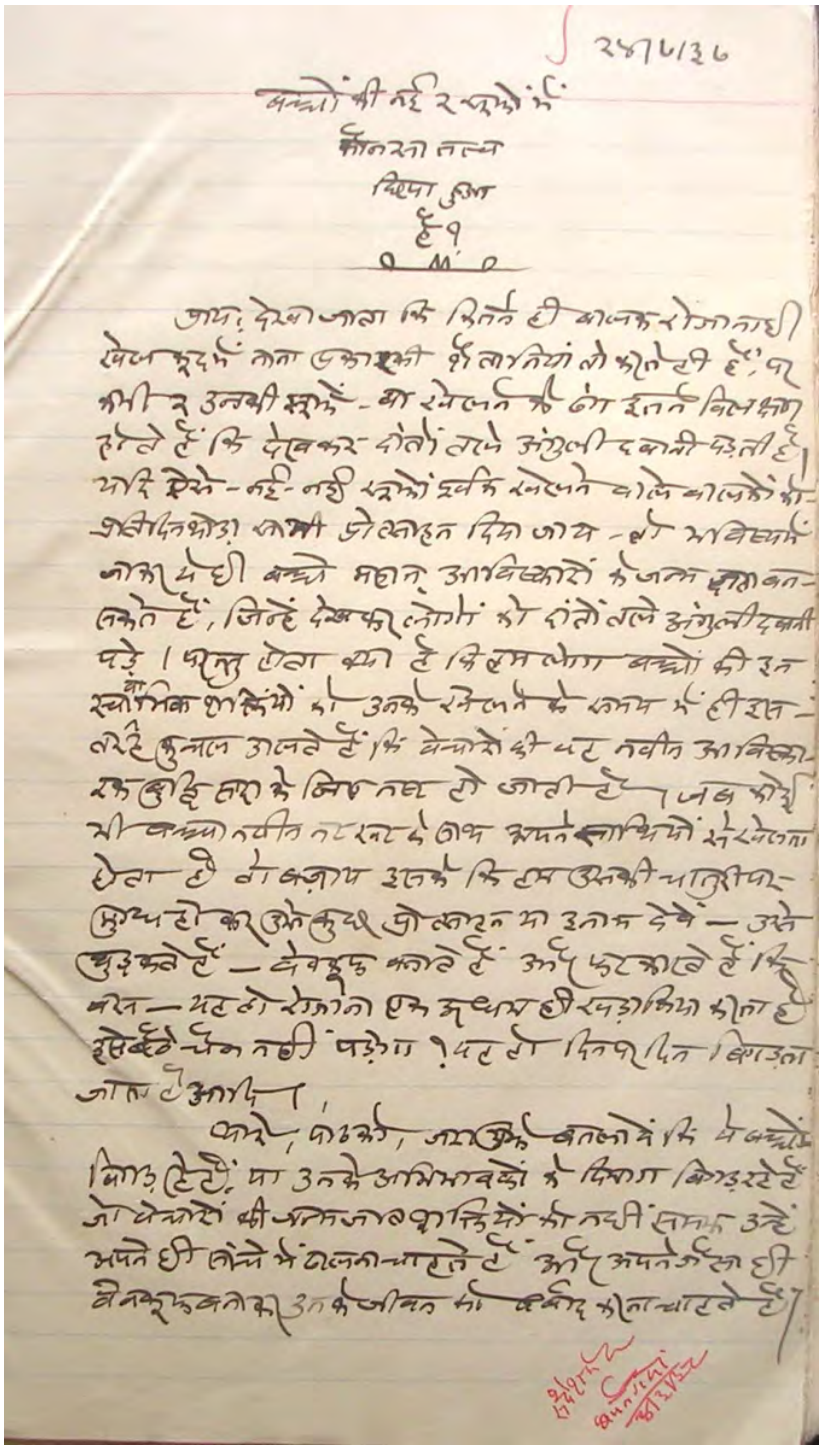

२४/६/३६

बच्चों की नई रचनाओं में
कौनसा तत्व
छिपा हुआ
है।

प्रायः देखा जाता है कि कितने ही बालक रोजाना ही खेल कूद में नाना प्रकार की शैतानियां तो करते ही हैं, पर कभी २ उनकी सूझें - या खेलने के ढंग इतने विलक्षण होते हैं कि देखकर दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। यदि ऐसे - नई - नई सूझों युक्त खेलने वाले बालकों को - प्रोत्साहित थोड़ा सा भी प्रोत्साहन दिया जाय - तो भविष्य में जाकर ये ही बच्चे महान् आविष्कारों के जन्मदाता बन सकते हैं, जिन्हें देखकर लोगों को दांतों तले अंगुली दबानी पड़े। परन्तु होता क्या है कि हम लोग बच्चों की इन स्वाभाविक शक्तियों को उनके खेलने के समय में ही इस तरह कुचल डालते हैं कि बेचारों की यह नवीन आविष्कारक बुद्धि सदा के लिए नष्ट हो जाती है। जब कोई भी बच्चा नवीन तरह का खेल अपने साथियों से खेलता होता है तो बजाय इसके कि हम उसकी चातुरी पर मुग्ध होकर उसे कुछ प्रोत्साहन या इनाम देवें - उसे झिड़कते हैं - बेवकूफ बनाते हैं और फटकारते हैं कि बस - यह तो रोजाना एक न एक ऊधम ही खड़ा किया करता है इसके मारे चैन नहीं पड़ेगा ? यह तो दिन पर दिन बिगड़ता जाता है आदि - ।

कहिये, पाठको, जरा आप बतलावें कि ये बच्चे बिगड़ रहे हैं, या उनके अभिभावकों के दिमाग बिगड़ रहे हैं जो बेचारों की स्वाभाविक शक्तियों को नहीं समझ उन्हें अपने ही सांचे में ढालना चाहते हैं और अपने जैसा ही बेवकूफ बनाकर उनके जीवन को बर्बाद करना चाहते हैं।

जैन-सन्देश

ता० ३१ मार्च सन् १९३८ ई०

बाल-विलास—

बच्चों की नई-नई सूझों में कौनसा तत्त्व छिपा हुआ है ?

[लेखक—श्रीयुत पं० हीरालालजी शास्त्री]

प्रायः देखा जाता है कि कितने ही बालक रोजाना ही खेल कूद में नाना प्रकार की शैतानियां तो करते ही हैं, पर कभी-कभी उनकी सूझें या खेलने के ढङ्ग इतने विलक्षण होते हैं कि देख कर दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है। यदि ऐसे-नई-नई सूझ पूर्वक खेलने वाले बालकों को प्रतिदिन थोड़ा-सा भी प्रोत्साहन दिया जाय तो भविष्य में जाकर ये ही बच्चे महान आविष्कारों के जन्म-दाता बन सकते हैं, जिन्हें देख कर लोगों को आश्चर्यचकित रह जाना पड़े !

परन्तु होता क्या है कि अक्सर लोग बच्चों की इन स्वाभाविक शक्तियों को उनके खेलने के समय में ही इस प्रकार कुचल डालते हैं कि बेचारों की वह नवीन अविष्कारिका बुद्धि सदा के लिये नष्ट हो जाती है। जब कोई भी बच्चा नवीन नट-खट के साथ अपने साथियों से खेलता होता है तो बजाय इसके कि—हम उसकी चातुरी पर मुग्ध होकर उसे कुछ प्रोत्साहन या पारितोषिक देवें—उसे घुड़कते हैं—बेवकूफ बनाते हैं और फटकारते हैं कि बस—यह तो रोजाना एक ऊधम ही खड़ा किया करता है, इसे बैठे चैन नहीं पड़ेगा, यह तो दिन पर दिन बिगड़ता जाता है आदि।

प्यारे पाठक, जरा मुझे बतलाइये कि क्या ये बच्चे बिगड़ रहे हैं या उनके अभिभावकों के .....? जो बेचारों की जन्म-जात शक्तियों को नहीं समझ उन्हें अपने ही सांचे में ढालना चाहते हैं और अपने जैसा ही बना कर उनके जीवन को बर्बाद करना चाहते हैं ?